GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE

RAJYA SABHA
STARRED QUESTION NO. *35

ANSWERED ON 06.02.2025

PLAN TO INCLUDE PANDHARICHI VARI IN UNESCO'S INTANGIBLE CULTURAL HERITAGE LIST

*35 SHRI DHAIRYASHIL MOHAN PATIL :

Will the **Minister of CULTURE** be pleased to state:

(a) whether Government has any plan to include Pandharichi Vari, the annual pilgrimage to Pandharpur, in the intangible cultural heritage list of UNESCO;

(b) if so, the steps taken for submission and documentation of its cultural significance for nomination; and

(c) whether Government is working with cultural organizations and local communities to preserve and promote this tradition?

ANSWER

THE MINISTER OF CULTURE AND TOURISM
(SHRI GAJENDRA SINGH SHEKHAWAT)

(a) to (c): A Statement is laid on the table of the House

STATEMENT

Statement referred in reply to Part (a) to (c) of Rajya Sabha Starred Question No. *35 for reply on 06.02.2025 asked by Shri Dhairyashil Mohan Patil

(a) and (b) Ministry of Culture through Sangeet Natak Akademi (SNA), the nodal implementing agency for Intangible Cultural Heritage (ICH), examines the proposal(s) received from the community/ stakeholders for inclusion/ nomination to the UNESCO'S Representative List of ICH of Humanity.

For inclusion of an element in the UNESCO's Representative List of ICH, the state parties are required to submit nomination dossier on the relevant element for evaluation and examination by UNESCO Committee.

No proposal in prescribed format has been received.

(c) Ministry of Culture through Sangeet Natak Akademi and the support of the district administration, Solapur, Maharashtra and the Shri Vitthal Rukmini Temple Trust, Pandharpur, Maharashtra organized Kala Pravah, a temple festival at Shri Jagadguru Sant Tukaram Maharaj Bhavan from 23-24 June, 2024, which included performances of Bharud, Warkari Kirtan, Sapta Khanjiri Bhajan, Dashawtar, and Warkari Dindi procession.

*****

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

राज्य सभा
तारांकित प्रश्न संख्या *35
उत्तर देने की तारीख 06.02.2025

"पंढरीची वारी" को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करने की योजना

***35. श्री धैर्यशील मोहन पाटिल :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार की पंढरपुर की वार्षिक तीर्थयात्रा "पंढरीची वारी" को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करने की कोई योजना है;

(ख) यदि हां, तो नामांकन के लिए इसके सांस्कृतिक महत्व को प्रस्तुत करने और उसके दस्तावेजीकरण के लिए क्या कदम उठाए गए हैं; और

(ग) क्या सरकार इस परंपरा को संरक्षित करने और इसे बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक संगठनों और स्थानीय समुदायों के साथ काम कर रही है?

उत्तर
संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (ग) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

'पंढरीची वारी" को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करने की योजना" के संबंध में दिनांक 06 फरवरी, 2025, को श्री धैर्यशील मोहन पाटिल द्वारा पूछे गए राज्य सभा तारांकित प्रश्न संख्या *35 के भाग (क) से (ग) के उत्तर में उल्लिखित विवरण।

(क) और (ख): संस्कृति मंत्रालय, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) हेतु नोडल कार्यान्वयन अभिकरण- संगीत नाटक अकादमी के माध्यम से, यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में सम्मिलित किए जाने/नामांकन किए जाने हेतु समुदाय/हितधारकों से प्राप्त प्रस्ताव (प्रस्तावों) की जांच करता है।

किसी तत्व को यूनेस्को की आईसीएच की प्रतिनिधि सूची में शामिल किए जाने के लिए, उस देश के पक्षों द्वारा, संगत तत्व संबंधी नामांकन डोजियर को, यूनेस्को समिति द्वारा मूल्यांकन और जांच किए जाने हेतु प्रस्तुत करना अपेक्षित होता है।

निर्धारित प्रारूप में कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है।

(ग): संस्कृति मंत्रालय द्वारा संगीत नाटक अकादमी और जिला प्रशासन, सोलापुर, महाराष्ट्र और श्री विट्ठल रुक्मिणी मंदिर ट्रस्ट, पंढरपुर, महाराष्ट्र के माध्यम से 23-24 जून, 2024 को श्री जगदगुरु संत तुकाराम महाराज भवन में 'कला प्रवाह' नामक मंदिर उत्सव आयोजित किया गया जिसमें भरुड़, वारकरी कीर्तन, सप्त खंजिरी भजन, दशावतार की प्रस्तुतियां और वारकरी डिन्डी जुलूस शामिल हैं।

*****

श्री धैर्यशील मोहन पाटिलः उपसभापति महोदय, पंढरपुर की वारी की एक हजार साल की जो परंपरा है, उसको यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में स्थान मिलने के बारे में मेरा प्रश्न है। सर, पंढरपुर की वारी, पंढरपुर तीर्थ क्षेत्र की यात्रा हजार सालों से चली आ रही है। उसमें अनेक जाति, धर्म, पंथ, प्रांत के भेदाभेद को भेदते हुए समता, एकता और बंधुता का पाठ पढ़ाते हुए दस लाख वारकरी संप्रदाय के भक्त लोग महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और कर्णाटक के कुछ गांवों से चले आते हैं। सर, वारकरी संप्रदाय की परंपरा ने संत नामदेव, संत रानोबाराय, संत एकनाथ महाराज, संत तुकोबाराय जैसे संतों ने अपने विचारों से महाराष्ट्र की भूमि को परिपोषित किया है। आज का जो प्रगतिशील और उन्नत सामाजिक महाराष्ट्र दिखता है, उसका कारण यह है कि पंढरपुर की वारी और वारकरी संप्रदाय ने बंधुता और न्याय का पाठ सिखाया है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः आप अपना प्रश्न पूछिए।

श्री धैर्यशील मोहन पाटिलः उपसभापति महोदय, मेरा सवाल यह है कि सांस्कृतिक दृष्टि से और सामाजिक दृष्टि से उन्नत संस्कृति, परंपरा का यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में समावेश होने के लिए क्या केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्रालय कुछ कदम उठाएगा?

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावतः उपसभापति महोदय, भारत की संस्कृति, जो विविधताओं से भरी हुई हैं, उसमें अनेक तरह की ऐसी परंपराएं हैं, ऐसी रीतियां हैं, ऐसे उत्सव हैं और अनेक तरह के ऐसे आयोजन हैं, जो सदियों से प्रथा के रूप में अपनाए जा रहे हैं। निश्चित ही इस तरह के आयोजन विविधताओं में बसे हुए भारत को एकता का स्वरूप प्रदान करते हैं।

उपसभापति महोदय, Intangible Cultural Heritage की लिस्ट में inscription की लंबी प्रक्रिया है, जिसमें प्रपोजल राज्य सरकार, भारत सरकार को या सीधे संगीत नाटक अकादमी में ICH की Nodal division को भेजती है। उसके बाद नोडल एजेंसी उसको रिव्यू करती है। रिव्यू करने के बाद उसमें National Inventory List समाहित की जाती है। उसके बाद भारत सरकार की तरफ से UNESCO को नामित किया जाता है। अब तक भारत सरकार के प्रयासों से आने वाले वर्ष के लिए हमारे 15 Intangible Cultural Heritage को इस सूची में समाहित किया गया है, क्योंकि इसमें व्यवस्था के अनुरूप दो साल में एक देश एक ही प्रपोज़ल मूव कर सकता है। मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्यों के और देश के संज्ञान में लाने के लिए कि इस वर्ष के प्रपोज़ल के रूप में 2023 में हमने जो सबमिट किया है, जिसको 2025 में कंसिडर करके inscribe किया जाएगा। हमने दिवाली फेस्टिवल, जो भारत को एकता के सूत्र में बांधता है, उसे inscribe करने के लिए नामित किया है। सर, आने वाले समय में इस तरह के और प्रपोज़ल्स, जो भारत सरकार के संज्ञान में लाए जाते हैं या लाए जाएंगे, उन सबको इस प्रक्रिया के तहत लाकर हम आने वाले समय में नामित किया जा सके, इसके लिए निरंतर काम कर रहे हैं।

श्री उपसभापतिः श्री धैर्यशील मोहन पाटिल, दूसरा सप्लीमेंटरी पूछिए।

श्री धैर्यशील मोहन पाटिलः उपसभापति महोदय, इस वारकरी संप्रदाय की जो परंपरा है, जो शिक्षवण है, वह काव्य स्वरूप में बताई जाती है, जिसको अभंग कहते हैं। अभंग परंपरा रहती है। सर, उत्तर में संत तुकाराम महाराजों का उल्लेख किया गया है। मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि संत श्रेष्ठ तुकाराम महाराजाओं की जो अभंग परंपरा है, उसको संरक्षण मिलने के लिए, उसका डिजिटल दस्तावेजीकरण करने के प्रस्ताव के बारे में केन्द्र शासन के संस्कृति मंत्रालय द्वारा क्या कदम उठाए जाएंगे? उसके लिए रचनात्मक उपाय किए जाएंगे और वे क्या रहेंगे?

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावतः उपसभापति महोदय, मैं माननीय सदस्य को धन्यवाद करते हुए यह निवेदन करना चाहता हूं कि भारत सरकार इस तरह की हमारी संस्कृति के विभिन्न अंगोंपांग, जो समय के साथ कहीं विलुप्त हो रहे हैं या क्षीण हो रहे हैं, उन सबको समर्थन करने के लिए अनके तरह के प्रयास करती है। यह फेस्टिवल, जिसके बारे में अभी माननीय सदस्य ने हम सभी के सामने इस प्रश्न को रखा है, मैं इस संबंध में उन्हें बताना चाहता हूं कि संगीत नाटक अकादमी ने जगत गुरु, संत तुकाराम भवन में स्थानीय प्रशासन और मंदिर ट्रस्ट के साथ मिलकर 'कला प्रवाह' के नाम से एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। इसके अतिरिक्त भी इस तरह के अन्य प्रपोज़ल्स, डिजिटलाइज़ेशन के प्रपोज़ल्स माननीय सदस्यों के संज्ञान में आए होंगे कि भारत सरकार की माननीय वित्त मंत्री महोदया ने अभी जो बजट पढ़ा है, उसमें भी हमने इस तरह की सारी मैन्युस्क्रिप्ट्स, जो हमारी हज़ारों साल की लिखित धरोहर हैं, उन्हें डिजिटलाइज़ करने के लिए काम किया है।

महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि आने वाले समय में उपलब्ध संसाधनों की सीमितता की बात को संज्ञान में रखते हुए, इस तरह के सारे विषय, ऐसी अमूर्त हैरिटेज को डिजिटलाइज़ करके संरक्षित कर सकें - हम उस पर काम कर रहे हैं।

श्री उपसभापति: माननीय सदस्य, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल, आप थर्ड सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछिए।

श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल : उपसभापति जी, एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हमारे माननीय सदस्य ने, हमारे महाराष्ट्र के लिए उठाया है। महोदय, हम उस इलाके से आते हैं कि हमारे यहाँ पर पंढरपूर की वारी होती है। महोदय, वह कोई फेस्टिवल नहीं होता है। मैं मंत्री जी को करेक्ट करना चाहती हूं कि वे लोग 15-20 दिन तक चलते रहते हैं। वे लोग सभी जगह से, रूरल एरिया से चलते हैं और चलते-चलते पंढरपूर तक आते हैं। महोदय, हिंदुस्तान में शायद वहाँ पर पहली बार जातीय निर्मूलन का मूल मंत्र रचा गया था, क्योंकि वहाँ जाति, पाती जैसा कुछ नहीं होता है। क्योंकि वे सभी लोग वारकरी होते हैं, नॉर्मल लोग होते हैं, सिंपल लोग होते हैं, अगर इनके लिए आपकी तरफ से पहल करके कुछ कोशिश की जाए, तो हम सभी लोग साइन करके देने के लिए तैयार हैं। महोदय, इसको महत्व देना बहुत जरूरी है और इस लिस्ट में लाना बहुत जरूरी है।

श्री उपसभापति: आपका सवाल क्या है?

श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल: मेरा सवाल है कि क्या ये इस काम को करेंगे?

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, मैंने मूल प्रश्न के उत्तर में भी यह निवेदन किया था कि भारत की संस्कृति में ऐसे अनेक उत्सव हैं। माननीय सदस्या ने जो कहा है, मैं इसके लिए उनकी भावना का सम्मान करता हूं कि पंढरपूर की वारी जातीय उन्मूलन से जुड़ी है और जातीय उन्मूलन का संदेश देती है, जातीय विभेद को मिटाती है। माननीय प्रश्नकर्ता सदस्या ने भी इस बात का उल्लेख अपने प्रश्न में किया है। महोदय, मैंने कहा था और मैंने निवेदन किया है कि कुंभ का फेस्टिवल भी ऐसा ही है। हिंदुस्तान में अनेक ऐसे फेस्टिवल्स हैं, जहाँ पर जातीय विभेद समाप्त हो जाते हैं। अभी प्रयागराज में महाकुंभ हो रहा है, जहाँ 45 दिन में लगभग 45 करोड़ लोग आएंगे। वहाँ पर न कोई किसी से जाति पूछता है, न किसी के समाज का भेद पूछता है और न किसी पूजा पद्धति की चर्चा करता है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: रणदीप सिंह सुरजेवाला जी, आप बिना अनुमति के मत बोलिए।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: न ही कोई वहाँ पर उस विषय में किसी की सामाजिक हैसियत के बारे में प्रश्न करता है। सभी लोग साथ खड़े होते हैं। महोदय, देश भर में ऐसे अनेक उत्सव अनेक जगहों पर आयोजित होते हैं, जहाँ पर जाति, समाज, वर्ग, पूजा पद्धति आदि का भेद मिटाकर लोग आस्था के भाव के साथ एकत्रित होते हैं और हम सभी उन सभी उत्सवों को, चाहे वे किसी भी रूप में आयोजित होते हों, वे चाहे पैदल यात्रा के रूप में आयोजित हों या अन्य किसी रूप में आयोजित हों, हम उन सभी को फेस्टिवल्स के रूप में देखते हैं। महोदय, सभी लोग ऐसे महत्वपूर्ण फेस्टिवल्स को निश्चित रूप से और अधिक सपोर्ट करें, हम इसका निरंतर प्रयास करते हैं। जैसा मैंने कहा है कि संस्कृति मंत्रालय इस फेस्टिवल के साथ जुड़कर स्थानीय प्रशासन और मंदिर प्रशासन के साथ मिलकर हमारे स्कोप ऑफ दि वर्क में जितने भी विषय हैं, उन सबके ऊपर हर बार निरंतर काम करता है तथा हम इस विषय में आगे और भी काम करेंगे। महोदय, इस प्रपोज़ल की प्रक्रिया, जो मैंने आप सबके सामने रखी है, इसके पहले चरण में अभी जो प्रपोज़ल प्राप्त हुआ है, उस पर आगे विचार होने के बाद, जिस प्रकार का निर्णय होगा, उस निर्णय को आने वाले भविष्य में हम आप सभी लोगों के सामने साझा करेंगे।

डा. अजित माधवराव गोपछड़े: उपसभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे प्रश्न पूछने का अवसर दिया है। महोदय, महाराष्ट्र में स्थित भगवान गौतम बुद्ध की अजंता-एलोरा गुफाएं, परम पूज्य महामानव बाबा साहेब डा. अम्बेडकर जी की कर्मभूमि संभाजी नगर, मराठवाड़ा के तीन ज्योतिर्लिंग, नांदेड़ में परम पूज्य गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज की पुण्य पावन भूमि और संघ के परम पूज्य आद्य सरसंघचालक डा. हेडगेवार जी का मूल गाँव कंदकुरती है। वहाँ सरस्वती का बासर मंदिर है, बीदर में गुरु नानक देव जी का गुरुद्वारा है, नरसिंह भगवान की गुफा भी है। महोदय, तुलजा भवानी माता को जोड़ने वाला प्राचीन शालिवाहनकालीन कॉरिडोर के सांस्कृतिक विकास करने हेतु मैंने आपसे एक निवेदन दिया था। उपसभापति महोदय, मेरा

माननीय मंत्री जी से यह प्रश्न है कि क्या सांस्कृतिक मंत्रालय शालिवाहनकालीन कॉरिडोर के लिए हमारे महाराष्ट्र, तेलंगाना और कर्णाटक राज्य में कुछ कदम आगे बढ़ा रहा है?

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, यह प्रश्न मूल प्रश्न से संबद्ध नहीं है और प्रत्यक्ष रूप से, उसके मंत्रालय से भी संबद्ध नहीं है। मैंने पर्यटन मंत्रालय के पिछले प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा था कि इस तरह के सारे प्रोजेक्ट, proposal राज्य सरकार का विषय होने के नाते राज्य सरकार से आते हैं। माननीय सदस्य ने मुझे पत्र लिखा था। मैं माननीय सदस्य के संज्ञान में लाने के लिए निवेदन करना चाहता हूँ कि वह हमने महाराष्ट्र सरकार को भेजा है। जब इस तरह के प्रोजेक्ट, proposal को राज्य की तरफ से भारत सरकार में प्रेषित किया जाएगा, तो तय स्कीम्स में निश्चित रूप से उन पर विचार किया जाता है और आगे भी विचार होगा।

SHRI NIRANJAN BISHI: Sir, I would like to know from the hon. Minister whether the Government has any plan to include natural and cultural heritage sites like Gandhamardan Mountain Range, Bhim Pahad Hills and Chandili Hills of Balangir District in the State of Odisha in the UNESCO World Heritage List.

श्री उपसभापतिः माननीय सदस्य, निरंजन जी, यह सवाल पंढरीची वारी, पंढरपुर से जुड़ा है। आपका सवाल अलग है। आपने दूसरा सवाल पूछा है। इससे संबंधित कोई सवाल है, तो मैं आपको पूछने की इजाजत दे सकता हूँ। माननीय सदस्य, श्री राजीव शुक्ल।

श्री राजीव शुक्लाः सर, इसमें मैंने देखा भी और मंत्री जी ने भी यूनेस्को की लिस्ट के बारे में बात की। इसी तरह से, जो यूनियन हेरिटेज लिस्ट है, उसके बारे में बात की। अगर आप अंकोरवाट को देखें, तो वहाँ पर मिलियन्स ऑफ टूरिस्ट जाते हैं। हमारे यहाँ तो एक से एक धरोहरें हैं, एक से एक त्योहार हैं। दिवाली के लिए इन्होंने बताया कि शामिल कराने के लिए प्रयास कर रहे हैं। यह बहुत अच्छी बात है। होली, दिवाली, वसन्त पंचमी सब जगह मनाए जाते हैं। हम मंत्री जी से जानना चाहते हैं कि इन सबके लिए हमारा कोई प्रयास क्यों नहीं होता है। आप मदुरै का मीनाक्षी टैम्पल देखिए। वह यूनियन हेरिटेज लिस्ट में क्यों नहीं आ सकता है? सर, यह इम्पॉर्टेंट बात है। अगर आपने जो शुरू किया है, इस तरह के प्रयास किए जाएं, तो और किन-किन धरोहरों को ले सकते हैं, कौन-कौन त्योहार ले सकते हैं, जैसे आपने पंढरपुर वाले के बारे में कहा है।

श्री उपसभापतिः आप सवाल पूछिए। आप सवाल पूछिए।

श्री राजीव शुक्लाः जयराम जी, आप क्यों बोलते हैं? यह मेरी समझ में नहीं आता है। ये हमारी पार्टी में हैं या हमारी पार्टी से बाहर हैं। हमेशा अपने मेम्बर को ridicule करने की कोशिश करते हैं। यह कौन सी बात है?

श्री उपसभापतिः आपको याद दिलाते हैं कि आप सवाल पूछिए। पूरे हाउस को याद दिलाते हैं कि सवाल पूछिए और अब आपको भी दिला रहे हैं।

श्री राजीव शुक्लाः यह गलत बात है। यह यूनियन हेरिटेज लिस्ट जवाब में है, मैं इसीलिए पूछ रहा हूँ। यूनेस्को की लिस्ट में आप कौन-कौन सी भारतीय धरोहरों को शामिल कराने का प्रयास कर रहे हैं?

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत: माननीय उपसभापति महोदय, माननीय दोनों सदस्यों की भावना का सम्मान करते हुए, मैं निवेदन करना चाहता हूँ। टेंजिबल हेरिटेज की सूची में नाम दर्ज कराने के लिए एक देश एक साल में एक ही proposal भेज सकता है। माननीय उपसभापति महोदय, मैं माननीय सदस्य का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। प्रश्न पूछने के बाद भी शायद वे प्रश्न काल से लेकर अब तक एक दूसरे के साथ व्यस्त हैं। ...(**व्यवधान**)... माननीय उपसभापति महोदय, मैं दोनों माननीय सदस्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए निवेदन करना चाहता हूँ। भारतीय संस्कृति में सामंजस्य के लिए बहुत बड़ा स्थान है। Tangible heritage assets में साल में एक देश एक proposal move कर सकता है। जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा, अंकोरवाट की चर्चा की, मैं सदन और देश के संज्ञान में लाने के लिए निवेदन करना चाहता हूँ कि भारत सरकार के एएसआई ने ...(**व्यवधान**)... माननीय विदेश मंत्री जी यहाँ बैठे हैं, उनका धन्यवाद करता हूँ कि विदेश मंत्रालय के द्वारा प्रदत्त संसाधनों के आधार पर अंकोरवाट टैम्पल को restore करने का काम किया है। इसके अतिरिक्त भी भारत में हमारे पास इतने सारे tangible assets हैं, इतनी धरोहरें हैं कि एक साल में एक लिमिट के अंतर्गत जो सूची तय होती है, क्योंकि हमारे पास बहुत लम्बी नेशनल लिस्ट है, हम उन सबको सूचीबद्ध कराने का प्रयास करते हैं। पिछले चार-पाँच साल से लगातार हर साल हमारी एक धरोहर सम्मिलित होती है। 2024 में वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी की भारत में हुई मीटिंग में भी हमारे असम के Moidams को वर्ल्ड हेरिटेज सूची में समाहित किया गया है। इसके अतिरिक्त, intangible assets के दृष्टिकोण से जैसा कि मैंने बताया कि हमारे पास दो साल में एक inscribe कराने का अवसर होता है, लेकिन ऐसे multilateral heritage लिस्ट के लिए हम चाहें, तो उनके लिए नंबर्स की कोई समय की सीमा या नंबर्स की सीमा नहीं है। नवरोज फेस्टिवल को पहले भारत सरकार ने नामित करके इस तरह के intangible asset में लिया था। हमारे जो ऐसे intangible heritage assets हैं, उनको inscribe कराने के लिए जो मल्टीलेटर्ल असेट्स हैं, उनके लिए भी भारत सरकार लीडरशिप लेकर प्रयास कर रही है।।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Minister, Question Hour is over.